



ॐ
ॐ

कुक्क २ स या न जा गि नी मा आ द नु वं कु द नु व स स स न गु च च ल ष मि श्री ग न ध ति या २ रु न गि वा क
व द गृ न य स च यि स ॐ स र न ग र वी वि न न म हं अ का न न द द ध नु २ ख च यि स त ड ता ध च स स
ग ना हं २ ग ना हं ग ना ग ना हं हं स स हं दा ज्जा ति ग व था ग ध नु २ व द य ण म दा ध च स स ध वः
स म गं ख न द द ध नु २ ग न द स मा दि य च द स च स स मा या द द ती न ड गु २ मा दि य क न धा स त
म ह स स ॐ स र न ग र्गु ग न मा त ति स यी च क ल वि ग णी म धु त मा आ धि मि न न त्र म नः

ॐ
ॐ

मि ध न २ व द वा ना दि आ ति ग व स म च न नाना अ स्मि म दा द न स स र न ना हं ग ना हं हं २ ग ना हं ०
नी ल व र्ण च व क य मि म ख गि न वा य न मा आ न द्र म नु मि ध न स स वि ध व द नु २ च द्रु ज ठ म क न धा
वि ह्ना उ आ र न न म ख रि ता स स व द य ण म दा ध च म्म उ ग न ख द्वा क वि र मा आ न द्र म नु मि ध न स
क ल र्के का या ल य ल गृ या र्गि गृ त व द्वा गि र्वा ध न आ य च र्म क र्के व र्दि ना स स दि गं वि दि गं का काः
आ दि द म ठ प कि नी स द द आ आ न द्र म नु मि ध न २ न मा मि न मा मि धी व क स म च न स न गु च च ल न आः

पि न क्षम

॥ दान ॥

मन्त्रियश्च वृत्ता नृद्वन्द्वदिगन्तसम्भन यशिसीय

॥ गायत्री ॥

वक्राङ्गितया उद्यान, सनयुचलन आलाधि २ समयाज्ञान च, हनि (गम मधु लसम्वन वक्र वादिः)

॥ ० ॥ ५ ॥ राजा गङ्गादि शक्तिदत्ताचार्य डिङ्गागीनि ददञ्जकवाली रुक्मसलकालिगद्यः

नमस्तद्विष्णुलिङ्ग ॥ अथाग्निनीलुक्कवीर्यनद्वनदीवशि ॥ राजासद्वीर्यनद्वनदीवशि ॥

॥ यद्वाग्निनीलं यन्जायि २ सविक्त्तं वदिया डीदिया न समा ॥

सा स्यात्तत्रैकावकाञ्चश्च दृश्येदायवनी यस्याता ॥ भरुनकूगुक्षितियाभ कुद्वीव

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

मन्त्रं साधु विधीयते तदा १ द्रव्यसूत्राद्यनुष्ठानेन देहकृच्छ्रात्

अथ वाचादि आर्ति यमक १४ २ सुकिसः

१॥३॥३॥

[illegible]

गीदत्रकमलवर्धु, कृमससंलग्न, मधुकलदलवल्लिना २ गीविचूयाद्वज्र, खगमखदवी, भदनी
 पनियानयथायिमा ॥ ॥ नमोमनेलात्माता, गिरुवनमाता, वरुणादवीधीमर्गः
 लि २ सयचसलासल, वद्विमचलन, अनगलिद्विसिद्धिवचयमादा ॥ ॥ नदनव
 भिव, चदननचवद्व, अग्रगद्व, समयालिजागवन, निर्यर्गमासमवागमनीर्थ, अनगनि
 थेषुचद्वयाला ॥ ॥ अग्रद्वलवधुद्वजागिनिदवी, अनगविघ्ननिलवाल २ अ

समद्वारयद्वलिगनिलवाल, अग्रगद्वयासलद्वगवन्मा ॥ ॥ विध्वविधायितः
 नालनिदवी, अखयनिलअनजागिमाय, अग्रिमसखरुलदायनिदवी, अचमज
 चमद्वयायसचनगानि ॥ ॥ अग्रजागद्वगि, अग्रमखयचदल, दहिनवा
 चमिद्वयायचनवचमधुमालरुयित, नाचयि ॥ ॥ अग्रकजनिवद्वजागीनी, गिनिन
 वदवीगिरुवनययि ॥ ॥ अकालमुद्वय, यायचवधिव २ अग्रद्वयमाद्व, वचमि

लो १ अन्तयसमस्तवसमस्तवचिह्नो ॥ ० ॥ **॥ वागमातव ॥** वरुणाय विष्णवे ब्रह्मणे
 १ सिंधिनि व्याधिनि रुद्रकडवाकिनी ॥ ५ ॥ तमासि शीथाममवह्मनध्वरीया १ गिने
 नवदवी शिखरवतययिस्थ ॥ ॥ पूर्वदलवयश्चिभदक्रिणदिवादवी १ उकिनीदियानि
 चडसिवांवाकनि ॥ ॥ चतुर्वादिवांहुक्कुरुतुदवी १ निनिनिरुदवी नाचयिदवी ॥
 हलिहचवक्का ॥ ० ॥ अन्तयसमस्तव १ वातमन्त्रो गीनि समस्तवसंताप ॥ २६३ ॥

था

॥ वागमादि ॥ कात्यायि च थियावाला मुमनिदहनकोला १ चनकायि थिहायिवडायि कव
 थियायि च लाला ॥ ५ ॥ सलथरुक्कुरुवडायि च दिधिमागाहिनवडायि ॥
 तदिंरुक्कुरुवाकनमाध्यामयनायि वरुनयायि १ हारवालिजनयनयायि द्दुक्कुरुवजनया
 यि ॥ ॥ चवसमकमुचिसिद्धा कथ्यववायतयायि १ सलथरुक्कुरुनयनयायि गहिः
 रवृवाकनयायि ॥ ॥ थयनरुक्कुरुवाकनमाध्यामयनायि १ निलंसरुक्कुरुवाचडायि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

महिंजुसरायनयायि॥ ७ ॥ ॥ वगमलाड ॥ न क व द न र त म क ट आ लं क ता १ व ड ड
डा व ज य र क व र ध न धा रि ता ॥ ४ ॥ ॥ न मा भि म धीं कृ धी य म नृ ह्य ख लं १ म य र आ सा य र
य व धा रि ॥ ॥ द हिन धी ग व य ति वा स धी स हा वा र १ स ग व म धु ल सा श्रु य क रि ता रि
ता ॥ ॥ सृ ष्टि संहार वा या वि धु वे यां यि ता १ अ मृ त य व द न्या धे द ति न ह व धा ॥ ॥
व रू ध व य सा दि ष दा सा रु र यि या १ शु चू र व ध मा रू सि धि व व य सा दा ॥ ० ॥ ॥ न ग व न

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

२५३

श्री॥ गङ्गा मूलविनिनयनिताशुवयदवर, निर्याधियश्रुतिग, धेखरा २ मधिमकारकौत्ता
 नर, ध, नर, निकिचनसंकाशा ॥ ४ ॥ ॥ मालियाविद्यमालियादये, मालियादः खवि
 नाधनं २ मालिया मारामा लसंगाभा मरूयहमद्वनामिता ॥ ॥ यचमवानां कुधव
 डावप्र, निन्दिया लदहिनकावा २ मधनयनत्वदा, डावयचकरनिवाभ ॥ ॥ विचिग
 वसुकां वृकाहिवगा, डाटाइतमधिमधुता २ चभातचधृगचभादचस्वरा, यायचमिलिमे

१६ वन

लिवाकृन्त ॥ ॥ चला न च द्वि गत ला कृत्ति गाम् त्रिक मूख जू गि स द च १ दिना दत्वा न
म स त्व दा ना न मो शु न मो शु ग धा धिय ति ॥ ॥ **॥ पा ग ना १ ॥** क व न वृ थ ला क र क व
न वृ थ व र्ध १ अ थ य नि लं ज न स या च वि स र्ध ॥ ॥ ना च थि क व ध व का न क सा ने १ त्व द्रां ग
उ म चू यी व न ल सि च मा वा ॥ ॥ अ कृ त थि नि लं ज न अं क र वि रु ता १ अ न रू व ध व न स य
स या च वि स र्ध ॥ ॥ क रू वा च रु रु व रु क रू वा च रू हि नी ला १ अ व ध व का क र ग ति स रू अ

१७ वन

च द्या ॥ ॥ रु ल रु रु ल रु रु म रा स
रा वा ला स क री ॥ रु न व र ग न य न रु व
म धु ल मा शु ग सि रु च कि र छ रु ग न म धु ल मा शु
ल अ व ता च या चं द व यु ध मा सि व रा स ला के ध व र द व रा रा द्या गी व शु द न य रि रु
रु व थि नि चू डा म धि न च रु द व ॥ ॥ वा ति क स र ध च वि रु थि न वा धि य ॥ ॥ **॥ म ल ॥**

धलदाथ १ शुक्ल समचक्राया कृष्ण दारिद्र्यः खराय कृष्ण ॥ ॥ कैंकें रागानिदाः
 या सकि नमशीलवगममौ कृष्ण रदव १ नमासि १ शीतचन्द्रदव स्वर्गमथ या नारदव ॥
 ॥ ॥ दशशुभी हार्तिं गतल कृष्ण धरिया रुगमनाथ नरायण दाना १ शीतमिमा रुवः
 शिल्पं मग धरिया शीला कृष्ण रमना ॥ ० ॥ नमश्चक्रावसावशिच ॥ वक्रया गीरु
 निरुवृवाया १ शिशुवननाथा दहिमयाथ ॥ ५ ॥ यीवयिचमदावम सदासलक

येथा १ वज्रदवीयसादजनलवहन ॥ ॥ डडनालिगिदलकगलसंथाय १ दहिविला
सायवनसंहाजि ॥ ॥ उंजंयिचसदासलकुली १ यंचसिचसस्यविजवाचूनी ॥ ॥
मनयुचयसादचरुथोनिधक १ यचधरीचसंसाचसमुदा ॥ ॥ १३३ ॥ वागवाव
लि ॥ लमुककेचधाधलगीनयन १ गभसउचिनसिन्धुचरुवने ॥ ॥ १४ ॥ केनाकंकन
कंकननाकंक ॥ ॥ घाघचमडचदाथंयचगूधवा १ उंजसलजकुसुगकावावी ॥ ॥

सित्थितिशखचक्रमन्दथीयवर्धमसदहा १ यहुचवदनकदलसदचयमननयकासि
 ता ॥ ५ ॥ नसासि १ शीमहास १ शीमकाचयुनवायधुचयुव १ कमानिदहनहनवः
 चयदसवेहहननिधियाविता ॥ ॥ यथमकनदयवकयधुधरसुडासावितामरा
 जिना १ द्वितीयाकगधर १ तीयहनस १ यथयलकसवेवचय ॥ ॥ मृकयलक
 यागलुवनधमेवायचतुर्थवानधुनयसुका १ चलम १ १ गिरयकलिनकिमियसुसः

१२ वा ३३

अस्मत्प्रविवरा ॥ ॥ निवृद्धि वृद्धि ह्यथि रमि गुरा मिता सर्वे ह्यन विर्यं सा गचा २
वृद्धि न सच ना गत यत्र साध वरु कर्मने ॥ २३३ ॥ ॥ वा मय द्रु म ॥ वा स कल
मधुत सा म साधुता विवि गुरल दी वय मा दालि ता २ जो द ध स धान सं जा म स रु डा क स व ध
मा त सं मि ता ॥ धु ॥ ॥ वरु वा सा हि मा लि क न ह र व गि तु व न ए क स या थि ता २ रु डा
म का ठा ध ॥ ॥ ॥ वि ध वरु धि थि र म क लि वि र थि ता ॥ ॥ य तु च व द न य नि व कृ ति न

१३ दि न पु व

कुं नी ल ध्या म वा हि न यी ता २ उ हिन वा च वरु द नि च र म रु रु वा स धि मि ता र ॥ ॥ लि ता
॥ ॥ वा स वा च य न व द्वा क क या नं या ध व क स धु धा ति ता २ का धा धि य धी च क स
आ लि का लि द थि वा य थि धा रि ता ॥ ॥ य द्वा रि
वि रु थि ता २ यु ध सा मि धृ ष्टि सं द्रा च ना
वा ग व वा दि ॥ ॥ उ दि न तु व न क स वा स न
वा द ध रु डा य उ स द्रा च व न
क गी ता ॥
च न स वा २ नि मे

वृक्षासयनाथादहिनुरायवचयदाना॥ य ॥ शुक्रदेवदुयसुवधा गिरुवयायिनज
 गनठधरियायनसासिवरासला॥ ॥ कनकचलसमिहाराविशुधितकनकासुवव
 क्षादिश्वामकामलक्षारिवचनजासुवहसुहजानन्दसुवति॥ ॥ सचनचयकुविन
 रगधयुजियताचलानचलसमिश्रंक्षारियाशमिसिचथालतलमाकुयदानादधनयाय
 दुःखदुःख॥ ॥ चकवक्षसुवलयनसुवचनसुवचकुर्मासंयुक्तंश्वलयचिणद

२५
 २५
 २५

वृक्षाचिल्लाकेश्वरसहसुलकुवविजयजाग्रा॥ ॥ रागललित॥ द्वादशकुवव
 वदवदनचकुवक्षिनेगुलिलाककनंश्विष्टकालिगजद्वेचदुःखसकटधराकुयियचः
 कीकुशुलकशि॥ य ॥ नसासिचचनशीचकसंवचचायागिरुवनयायिनगुलिलाक
 कविचाश्वदशादिगसाचसगागकचधविविधिविद्यनगुयिनागकचधं॥ ॥ वज्रः
 दधुगकचसुठसचुल्लकांमधुसालहाउजासुवधसाशाश्वकचनिकायाचयचशूयागगी

शूलवक्राक्षिप्युत्सुकासुखं यथातिगा ॥ ॥ शिवकचविशसिमधुलमाश्रयिनिः
 वक्रवाचाहियल्लालिङ्गक्ष १८८ तिसंविश्वरसमधुलसुवननक विवाशयि सरुज्या
 नन्दमुचति ॥ ॥ वक्रसुवतागतं शीकृदवाच स्वासि यटवाति रुवस्य द्यैनिनासं
 १८९ आगमयुवगल्लुयदगचमना आद्विसिद्धिदहिधी ह्रूवसचधं ॥ ॥
 गगमधमन ॥ यमादिदगभिसन्दवीसन भवसधुलसनसि तवयना १९० दगभुजचडवद

तसशारिकवक्रवाचाहिकल्लालिङ्गिगा ॥ य ॥ कंकंकंदहदिहल्लन सायलस
 यवसंवाधियाल्ल १९१ दंठा जालिङ्गन म्दयसंसाध नावयिदा नशी समुवाया ॥
 कालगद्यधु गजवमिधुवा कचमिठसरुधुल्लालिङ्गिगा १९२ मर्कयल्लितकायाचवद्वंका
 याधयवधुवक्रगिल्लंधरा ॥ ॥ यन्त्रजिनवचसकतजाल्लकन यठसुदाराचन विंरु
 यिता १९३ जालिकालिद्रयि जालिद्रवाययि व्याधुचमेनिवासन क्लृप्तन ॥ ॥ नवमि

ॐ
ॐ
ॐ

रमा लाला लं वं श्री ममरा दिव्य चरु श्री नि क वृ ण हिया १ क लं क ल मी चरु रु या य स व न ग
व न्नि य र मा दि व रु गी ता ॥ ० ॥ रा ग र वी ॥ रा र व र म ह व रु वि रु ध र्मा द या
य रि रु मि र १ क रं ग र म ना ह ल म रु ल व रु धा रु हा य क म ल व ल ॥ ॥ ह र रा व रु
ह द य क म ल धी यं र क र १ आ द्धि सि द्धि क म वि द न वि ना ग न ह्वा यि म हा मू द्रा सि द्धि ॥
मा दि व रु हा य ग ग य र म रु ल वि ला ग यि त व र च क र १ नी च नी ल व र्क स र जि न धी र रा

ॐ
ॐ
ॐ

म रु रा य य रि म रु र ॥ ॥ य मा रि ल द ह दि ह र मि व रु र ॥ अ रु च रु ग रा ड र्क र नं
म य र व रु जि न न क क र यि या नि रु रु व रु ह य य रि रा व र ॥ ॥ य रु रु द य द र्क र
प रि य रु ल मा क र वि रु वि रं ग र १ स रु य रु च र ध सि रं ग र ध रि या र न यि स र ग व
क म ल र ॥ ० ॥ रा ग य ना धी ॥ वि द ल सं रु ल रु स व य रि ० ० रु मा र्क य रु क र
का या दा का ना १ रु रु व रु ह दि रु रु मा र्क य र न व रु र वि नि धा र ना ॥ ॥

१६६

अद्वयसंज्ञा १ की उनी कसल कले सुवा रुन्ना ॥ ॥ यस्मादिद्यां वि शील
वता वि १ लयन वव सम हव ववा वा ॥ ६८०३ ॥ वा वा य उयी ॥ दं विना ध
व वल विवा सयि कयि भा १८० रा व का म धु ल वा या ॥ ६८०४ ॥ ह का ह स ल का ग
न नि वा सि या १८० रा वा उ ५ ॥ ॥ अ मि य १ नि मे व द ह १ रा रु स च वा र या दिनः
ह व य यि स ॥ ॥ न च उ था गि नी न व स ल १ व रु वा वा हि आ लि क न का ले ॥ ॥ ८०

न व ठा क व व क वा ली १ अ य आ लि क न नी ला व रु वा ली ॥ ६८०५ ॥ * ॥ ६८०६ ॥
॥ वु रा ॥ ॥ ७७ ॥ ६८०७ ॥ १ ना ठा व लि त ॥ का ला दि व सि त प्र
का र्प णि ल्य भी लि सि धि आ लि ग ध ति धी रु व न १ ख व ल वा द ल क ल
न रु का ल अ व ना ग आ व न ध क व व ध ॥ ६८०८ ॥ ॥ अ म न ग य रु व न ध
म न दू व ता ठ न मा ल व ल म द न या य रु व न ध १ वि वि द नि मू ख रु न वि

घनविनाशनं ॐ शुद्धिदद्यादिगतागकत्रयं ॥ ५० ॥ दहिनकत्रयि
 धनयत्रयुजिहीयायन चत्रयद्विधियत्रयमसूत्रमिगमनं ॥ यामख
 धर्मधनत्रयक कयाल गवमसूत्रगवमकुयाय ॥ ५१ ॥ धाय
 कृद्वृत्तीला अदृढास विद्वत्कदंष्ट्रा कलात्रयदनं ॥ वायुचर्मनि
 वाशननत्रयमधुमाला जलिलिखादनमिद्विरुलदं ॥ ५२ ॥ गाव

निमृन्नवक गुन्नत्वध्यानदृष्टावनासंसायननृ ॥ वृद्धधर्मसासन
 संघयनित्रक कधीमहाकालाष्टकयादकावर्ष ॥ ५३ ॥ वागवा
 रणागा ॥ कामाद ॥ अवनिमहिकुजानू नीलसमदहा ॥ ककत्रयिनयन सीध
 मवदना ॥ ५४ ॥ वागनाहं हं ॥ हं हं हं ॥ काकअवत्र काधनाया ॥ वानि
 विदियनदूनिस्तारिकर्मय ॥ याहाखर्मय विरुवननार्थ ॥ ५५ ॥ दविद

पुननिग ॥

ववक्रां च मोक्षमाता शमात्रविद्युदं भक्तुयद्वयधाम ॥ ॥ विविदिः
दिप्रथममोचि लकुनदहा शङ्कगनयो विष्टिग वनरुलदायकं ॥ ❀ ॥





